अघोर चतुर्दशी - 10 सितम्बर 2026

शरीरं साधयति वा पातयति वा

स्वस्थ तन, तो स्वस्थ मन और यही है जीवन का सर्वोपरि धन

अघोर रोग मुक्ति साधना

रोग-शोक की समाप्ति

अघोर चतुर्दशी (10 सितम्बर 2026) अथवा किसी भी रविवार, मंगलवार अथवा किसी भी शुभ मुहूर्त में रात्रि को काले रंग के ऊनी आसन पर बैठ जाएं। सर्वप्रथम अपने सामने एक बाजोट पर लाल वस्त्र बिछाकर उस पर गुरु चित्र स्थापित कर दें। अघोरेश्वर शिव साधना में दी गई विधि अनुसार गुरुदेव निखिल का पूजन सम्पन्न करें।

गुरु पूजन के पश्चात् गुरु चित्र के आगे ही अष्टगंध की ढेरी बना लें। उस पर **'रोग मुक्ति शिव यंत्र'** स्थापित करें। सर्वप्रथम दोनों हाथ जोड़कर भगवान सदाशिव के मृत्युंजय स्वरूप का का ध्यान करें -

हस्ताम्भोजयुगस्थकुम्भयुगला दुद्धृत्य तोयं शिरः,
सिञ्चन्तं करयोर्युगेन दधतं स्वांके सकुम्भौ करौ।
अक्षस्रङ्मृगहस्तमम्बुगतं मूर्द्धेस्थचन्द्रस्रवत्,
पीयूषार्द्रतनुं भजे सगिरिजंत्र्यम्बकं च मृत्युञ्जयम्।।

भगवान मृत्युञ्जय के आठ हाथ हैं। ऊपर के दो हाथों से दो कलश उठाये हुए हैं और नीचे वाले दो हाथों से वे सिर पर जल डाल रहे हैं। सबसे नीचे वाले दो हाथों में भी वे दो कलश लिए हुए हैं, जिन्हें गोद में रखा हुआ है। सातवें हाथ में रुद्राक्ष और आठवें हाथ में मृग धारण कर रखा है, उनका आसन कमल का है, उसके सिर पर स्थित चन्द्रमा निरन्तर अमृत वर्षा कर रहा है, जिससे शरीर भीग गया है, वे त्रिनेत्र युक्त हैं, और उन्होंने मृत्यु पर विजय प्राप्त कर ली है, उनके बांयीं ओर भगवती गिरिजा विराजमान हैं। ध्यान के पश्चात् **'अघोर माला'** से निम्न मंत्र की 7 माला मंत्र-जप करें-

मंत्र

।। ॐ हां हीं हूं अघोरेभ्यो सर्व सिद्धिं देही देही अघोरेश्वराय हूं हीं हां फट्।।

यह मंत्र-जप दूसरे के लिए भी संकल्प करके किया जा सकता है। मंत्र-जप समाप्ति के बाद अष्टगंध (अथवा राख) से रोगी को टीका (7 दिन तक) लगाएं तथा यंत्र व माला को उसी वस्त्र में लपेट कर नदी या जल में प्रवाहित कर दें।

अघोर रोग मुक्ति साधना की विशेषता है, कि कैसा भी गम्भीर रोगी हो, उसकी तबीयत में निश्चित रूप से सुधार होने लगता है। इस साधना को हजारों-हजारों साधक ने सम्पन्न कर इस साधना का लाभ प्राप्त किया है। इस साधना से लाभ प्राप्त कर चुके साधकों ने अघोर रोग मुक्ति साधना को पत्रिका में प्रकाशित करने का निवेदन किया है।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/-